राष्ट्रीय सहारा
कानपुर • शनिवार • 22 जनवरी • 2022

किसानों को दी आलू को झुलसा रोग से बचाने की जानकारी

कानपुर (एसएनबी)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञानियों ने कन्नौज व कानपुर के ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा कर किसानों को आलू को झुलसा रोग से बचाने के उपाय बताये।

विश्वविद्यालय के पादप रोग विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एसके विश्वास के नेतृत्व में कन्नौज व कानपुर के ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा करने निकली कृषि विज्ञानियों की टीम ने आलू उत्पादक क्षेत्रों में जाकर आलू की फसल में लग रहे पछेती झुलसा रोग की गंभीरता का आकलन किया। विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ. खलील खान ने बताया कि कन्नौज में लगभग 50 हजार हेक्टेयर, फर्रुखाबाद में 35 हजार हेक्टेयर, इटावा में 20 हजार हेक्टेयर, कानपुर नगर में 16250 हेक्टेयर, औरैया में 5610 हेक्टेयर और कानपुर देहात में 3210 हेक्टेयर क्षेत्रफल में आलू की खेती की जा रही है। वहीं, डॉ. एसके विश्वास ने बताया कि वर्तमान समय में कानपुर मंडल में लगभग 1 लाख 30 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में आलू की खेती की जा रही है। कड़ाके की ठंड व हल्की बारिश तथा आलू की पत्तियों के अधिक समय तक नम रहने के कारण पछेती झुलसा रोग का फसल पर लगभग 20 से 25 फीसद प्रभाव भी पड़ चुका है। ऐसे में किसानों को फफूंदी नाशक दवा मैटको या इक्वेशन प्रो या कर्जेंट या रेडोमिल गोल्ड की एक मिली लीटर दवा को प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोलकर छिड़काव करें। टीम में डॉ. अमर सिंह यादव, डॉ. विनोद कुमार दोहरे आदि थे।

Sign in to edit and save changes to this file.

जन एक्सप्रेस

आलू: झुलसा रोग से बचाने के लिए दवा समुचित मात्रा में प्रयोग करने की सलाह

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डी. आर. सिंह के निर्देश के क्रम में शुक्रवार को विश्वविद्यालय के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ. एस. के. विश्वास के नेतृत्व में कृषि वैज्ञानिकों की टीम ने जनपद कन्नौज और कानपुर के आलू उत्पादक किसानों के प्रक्षेत्रों का दौरा कर आलू फसल में लग रहे पछेती झुलसा रोग की जांच की।

डॉ. विश्वास ने बताया कि इस समय में कड़ाके की ठंड व हल्की बारिश होने से आलू की पत्तियां अधिक समय तक नम रहने के कारण पछेती झुलसा रोग की शुरुआत 20 से 25 फीसदी तक हो चुकी है। उन्होंने किसानों को फफूंदी नाशक दवा जैसे मैटको या इक्वेशन प्रो या कर्जेंट या रेडोमिल गोल्ड की एक मिली लीटर दवा को प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोलकर फसल पर छिड़काव करने की सलाह दी। उन्होंने किसानों को फसल पर अपने स्तर से दवा का प्रयोग ना करने बल्कि कृषि वैज्ञानिकों से सलाह करने के बाद ही दवा का समुचित मात्रा में प्रयोग करने की बात कही।

इस दौरान उद्यान वैज्ञानिक डॉ.अमर सिंह यादव, डॉ. विनोद कुमार दोहरे, डॉ. अरविंद कुमार एवं आलू उत्पादक किसान मौजूद रहे।

मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने बताया कि जनपद कन्नौज में लगभग 50 हजार हेक्टेयर, फर्रुखाबाद में 35 हजार हेक्टेयर, इटावा में 20 हजार हेक्टेयर, कानपुर नगर में 16250 हेक्टेयर, औरैया में 5610 हेक्टेयर तथा कानपुर देहात में 3210 हेक्टेयर क्षेत्रफल एवं कानपुर मंडल में लगभग 1लाख 30 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में आलू की खेती की जा रही है।

दैनिक जागरण कानपुर 22/01/2022

आलू में 25 फीसद तक पछेती झुलसा रोग का प्रभाव

कानपुर : सीएसए के पादप रोग विज्ञान विभागाध्यक्ष डा. एसके विश्वास के साथ वैज्ञानिकों की टीम ने शुक्रवार को कानपुर व कन्नौज के आलू उत्पादक किसानों के खेतों का निरीक्षण किया। इसमें पता लगा कि कड़ाके की सर्दी, हल्की बारिश व आलू की पत्तियां अधिक नम रहने के कारण पछेती झुलसा रोग की शुरुआत हो चुकी है। सीएसए के मीडिया प्रभारी डा. खलील खान ने बताया कि मंडल में लगभग 1.30 लाख हेक्टेयर में आलू की खेती की जा रही है। निरीक्षण के दौरान डा. अमर सिंह यादव, डा. विनोद कुमार दोहरे, डा. अरविंद कुमार रहे। ज़ास

अमर उजाला कानपुर 22/01/2022

आलू की फसल को बचाने की बताई दवा

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पादप रोग विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. एसके विश्वास के नेतृत्व में कृषि वैज्ञानिकों की टीम ने जिले के अलावा कन्नौज में गांव-गांव जाकर आलू की फसल को रोगों से बचाने की दवा बताई। डॉ. विश्वास ने बताया कि इस समय ठंड व हल्की बारिश से आलू की पत्तियां अधिक समय तक नम रहती हैं। इससे पछेती झुलसा रोग की शुरुआत हो चुकी है। किसान फफूंदी नाशक दवा जैसे मैटको या इक्वेशन प्रोया कर्जेट या रेडोमिल गोल्ड की एक मिलीलीटर दवा को प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोलकर फसल पर छिड़काव कर दें। उन्होंने कहा कि किसान अपने मन से फफूंदी नाशक दवा का प्रयोग न करें। मीडिया प्रभारी डॉ. खलील खान ने बताया कि कन्नौज में 50 हजार हेक्टेयर, कानपुर नगर में 16250 हेक्टेयर और देहात में 3210 हेक्टेयर क्षेत्रफल में आलू की खेती की जा रही है। (संवाद)

सीएसए में पहली बार शुरू हुई स्ट्राबेरी की पैदावार

जासं, कानपुर : चंद्रशेखर आजाद (सीएसए) कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के विज्ञानियों ने पहली बार स्ट्राबेरी की पैदावार शुरू की है। इसके लिए विवि के सब्जी विज्ञान विभाग में पालीहाउस तैयार किया गया है। यहां मल्चिंग (पलवार) तकनीकी से करीब एक हजार से ज्यादा पौधे लगाए गए हैं। वर्तमान में पुष्प खिल रहे हैं और फलों का आना शुरू हो गया है। प्रयोग सफल होने के बाद विवि प्रशासन किसानों को इसकी खेती के प्रति जागरूक करेगा।

स्ट्राबेरी का उत्पादन अधिकतर पहाड़ी इलाकों में होता है, लेकिन अब मैदानी इलाकों में भी सर्दियों के मौसम में इसकी खेती शुरू हुई है। सब्जी विज्ञान विभाग के प्रमुख डा. डीपी सिंह ने बताया कि कानपुर व आसपास के जिलों में किसानों को भी जागरूक करने के लिए विभाग के फार्म में पहली बार उत्पादन शुरू किया गया है। मौसम और कीड़े मकोड़ों से बचाने के लिए

सीएसए विवि • फाइल फोटो

अब मैदानों में भी

- कल्याणपुर स्थित सब्जी विज्ञान विभाग में हो रहा नवीन प्रयोग
- पालीहाउस में मल्चिंग प्रणाली से लगाए गए सैकड़ों पौधे

पालीहाउस में इसका उत्पादन किया जा रहा है। हालांकि खेतों में भी पैदावार की जा सकती है, लेकिन उसके लिए पौधों का विशेष ख्याल रखने की जरूरत है। डा. सिंह ने बताया कि स्ट्राबेरी के पौधे बारिश के बाद अक्टूबर में लगाए जाते हैं। यह मौसम काफी उपयुक्त माना गया है।

स्प्रिंकलर विधि से सिंचाई

स्ट्राबेरी के पौधों को पर्याप्त नमी देने के लिए समय-समय पर खाद व पानी देना पड़ता है। मल्चिंग के दौरान ही पालीथिन के नीचे पाइप बिछा दी जाती हैं। इसकी मदद से ड्रिप व स्प्रिंकलर प्रणाली से खाद व पानी दिया जाता है। फल आने के बाद देना पड़ता है और फल का रंग जब आधे से अधिक लाल हो तो उन्हें तोड़कर एकत्र किया जाता है।

पौधे लगाने से पहले मल्चिंग

विभाग के विज्ञानी डा. राजीव कुमार ने बताया कि स्ट्राबेरी के उत्पादन के लिए खेत को विशेष प्रकार से तैयार करना पड़ता है। 20 सेंटीमीटर ऊंची व तीन फुट चौड़ी मेड़ बनाकर धान की पुआल बिछाकर मल्चिंग (पलवार) लगाते हैं या फिर पालीथिन से उसे कवर करते हैं। ताकि स्ट्राबेरी के फूल व फल मिट्टी को न छुएं। पलवार से खरपतवार भी नहीं होते और फसल सुरक्षित रहती है।